International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल का साहित्यिक अवदान

डॉ. अनिता सिंह

सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, डी. बी. एस. कॉलेज, गोविंद नगर, कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

सार

गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा लिखित बाल नाटकों, हास्य-व्यंग्य एकांकियों, समाज तथा राजनीति से जुड़े एकांकियों तथा नुक्कड़ नाटकों को संगृहीत किया गया है। डॉ. अग्रवाल ने प्रभात प्रकाशन, दिल्ली के लिए एकांकी नाटकों की एक बड़ी शृंखला का संपादन किया था। इस शृंखला में विषय-क्रम से एकांकियों का संकलन किया गया था। वर्धमान कॉलेज बिजनौर में हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल ने हिंदी साहित्य को ऊंचाइयों पर पहुंचाने में भरपूर योगदान दिया। उन्होंने करीब 100 पुस्तकों का लेखन तथा संपादन किया है। कई विश्वविद्यालयों में उनके साहित्य पर शोध कार्य हो चुका है और शोध कार्य वर्तमान में चल रहे हैं। डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल को राष्ट्रीय तथा प्रदेश स्तर पर दर्जनों सम्मान प्राप्त हुए हैं। डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल का जन्म 1944 में संभल में हुआ था, लेकिन उनका कार्य क्षेत्र बिजनौर ही रहा। वह बिजनौर में वर्धमान कॉलेज में हिंदी के विभागाध्यक्ष रहे। उन्होंने हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में रचनाएं कीं। उन्होंने पद्य, गद्य, कविता, नाटक, गजल लिखे। इसके अतिरिक्त उन्होंने बाल साहित्य भी खूब लिखा। उनके द्वारा लिखे गए बच्चों के नाटकों का मंचन कई विद्यालयों में किया गया। उनके द्वारा लिखी गई प्रमुख रचनाओं में सन्नाटे में गूंज, बाबू झोलानाथ, समय एक नाटक, भीतर शोर बहुत है, राजनीति में गिरगिटवाद, दंगे: क्यों और कैसे, विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे, हिंदी पत्रकारिता: विविध आयाम, आओ अतीत में चलें, मानवाधिकार : दशा और दिशा, गजल और उसका व्याकरण, मौसम बदल गया कितना, बच्चों के हास्य-नाटक, बच्चों के रोचक नाटक, ग्यारह नुक्कड़ नाटक, नारी: कल और आज, पर्यावरण : दशा और दिशा, हिंसा : कैसा-कैसी, रोशनी बनकर जिओ, वादविवाद प्रतियोगिता : पक्ष और विपक्ष , मंचीय व्यंग्य एकांकी, मेरे इक्यावन व्यंग, शिकायत न करो तुम, अक्षर हूं मैं, मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएं, आदमी है कहां आदि है।

परिचय

वह शोध दिशा नाम की पत्रिका के संपादक हैं। इस पत्रिका का वर्तमान हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल का कहना है कि हिंदी को पढ़ाने के साथ-साथ समझाने की भी आवश्यकता है। हिंदी के लिए बच्चों के मस्तिष्क में इसी प्रकार रुझान पैदा करने होंगे, जिस प्रकार हम अंग्रेजी के लिए करते हैं।[1] डॉ. गिरिराज सिंह अग्रवाल को उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इसके अतिरिक्त उन्हें डॉ. रतन लाल शर्मा स्मृति सम्मान, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग नई दिल्ली द्वारा सम्मान, अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन उज्जैन द्वारा सहस्राब्दी सम्मान, सरस्वती श्रीसम्मान, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर दो दर्जन से अधिक पुरस्कार[2] मिल चुके हैं। गिरिराज शरण अग्रवाल (डॉ॰) (जन्म:१४ जुलाई १९४४) हिन्दी भाषा के गद्य एवं पद्यकार हैं। इनका जन्म १४ जुलाई १९४४ को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के सम्भल नामक कस्बे में हुआ था।[3] इनके पिता का नाम रघुराजशरण अग्रवाल एवं माता का नाम कमलादेवी है। आरम्भिक शिक्षा उपरान्त इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से कला स्नातकोत्तर एवं पी॰एचडी॰ किया था। व्यावसायिक रूप से ये रीडर एवं अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी एवं शोध विभाग, वर्धमान स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बिजनौर (उ.प्र.) से जुड़े रहे हैं। इनकी प्रमुख विधाएँ गीत, ग़ज़ल, कहानी, एकांकी, निबन्ध, हास्य-व्यंग्य, बालसाहित्य एवं समालोचना। कुछ मुख्य कइतियों में पहली पुस्तक 'तीर और तरंग' नाम से 1964 में प्रकाशित हुई। इसमें जनपद मुरादाबाद के काव्यकारों का परिचयात्मक विवरण, उनकी रचनाओं सहित दिया गया था।[4]

मौलिक कृतियाँ

सन्नाटे में गूँज (ग़ज़लें, 1987), नीली आँखें और अन्य एकांकी (1994), जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ (1994), बाबू झोलानाथ (व्यंग्य, 1994), समय एक नाटक (ललित निबन्ध, 1994), बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक (1994), भीतर शोर बहुत है (ग़ज़लें, 1996), राजनीति में गिरगिटवाद (व्यंग्य, 1997), दंगे : क्यों और कैसे (1996), विश्व आतंकवाद : क्यों और कैसे (1997), हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम (1997); आओ अतीत में चलें (1998), मानवाधिकार : दशा और दिशा (1998), ग़ज़ल और उसका व्याकरण (1999), मौसम बदल गया कितना (ग़ज़लें 1999), बच्चों के हास्य-नाटक (2000), बच्चों के रोचक नाटक (2000), ग्यारह नुक्कड़ नाटक (2000), नारी : कल और आज (2001), पर्यावरण : दशा और दिशा (2002), हिंसा : कैसा-कैसी (2003), रोशनी बनकर जिओ (ग़ज़लें, 2003); वादविवाद प्रतियागिता : पक्ष और विपक्ष (2004), मंचीय व्यंग्य एकांकी (2004), मेरे इक्यावन व्यंग्य (2005), शिकायत न करो तुम (ग़ज़लें, 2006), अक्षर हूं मैं (काव्य 2008), मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ (2008), आदमी है कहाँ (ग़ज़ल संग्रह 2010)।[5]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

सम्पादित ग्रन्थ

तुलसी मानस सन्दर्भ, सूरसाहित्य सन्दर्भ, शोध-सन्दर्भ : एक (1980), शोध-सन्दर्भ : दो (1986), शोध-सन्दर्भ : तीन (1993), शोध-सन्दर्भ : चार (2004), शोध-सन्दर्भ : पाँच (2010) हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ, सन्दर्भ अशोक चक्रधर एवं हिन्दी साहित्यकार सन्दर्भ कोश (भाग-दो) डॉ॰ मीना अग्रवाल के साथ (2006)।[6]

विचार-सार

गान्धी ने कहा था, पटेल ने कहा था, तिलक ने कहा था, नेहरू ने कहा था, अरविन्द ने कहा था, विवेकानन्द ने कहा था, सुभाष ने कहा था, लाला लाजपत राय ने कहा था ; मैं गान्धी बोल रहा हूँ, मैं पटेल बोल रहा हूँ, मैं तिलक बोल रहा हूँ, मैं नेहरू बोल रहा हूँ, मैं अरविन्द बोल रहा हूँ, मैं विवेकानन्द बोल रहा हूँ, मैं सुभाष बोल रहा हूँ, मैं लाला लाजपत राय बोल रहा हूँ (सभी प्रतिभा प्रतिष्ठान, दिल्ली द्वारा प्रकाशित); इन्दिरा गान्धी ने कहा था (डायमण्ड पाकेट बुक्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित)।[7]

कहानियाँ

शिक्षा-जगत् की कहानियाँ, बाल्यजीवन की कहानियाँ, युवा विद्रोह की कहानियाँ, वृद्धावस्था की कहानियाँ, सांप्रदायिक सद्भाव की कहानियाँ, ग्राम्य जीवन की कहानियाँ, महानगर की कहानियाँ, दलित जीवन की कहानियाँ, नारी उत्पीड़न की कहानियाँ, विकलांग जीवन की कहानियाँ, कार्यालय जीवन की कहानियाँ (सभी प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित)।[8]

एकांकी

न्याय-अन्याय के एकांकी, युवा-मानस के एकांकी, सामाजिक मूल्यों के एकांकी, सांस्कृतिक गौरव के एकांकी, राष्ट्रीय एकता के एकांकी, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के एकांकी, कार्यालय जीवन के एकांकी, अंधविश्वास-विरोध के एकांकी, पारिवारिक सम्बन्धों के एकांकी, राजनीतिक परिवेश के एकांकी (प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित)।[9]

व्यंग्य

शिक्षा-व्यवस्था पर व्यंग्य, चिकित्सा-व्यवस्था पर व्यंग्य, पुलिस-व्यवस्था पर व्यंग्य, न्याय-व्यवस्था पर व्यंग्य, सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य, कार्यालयीन व्यवस्था पर व्यंग्य, राजनीतिक परिवेश पर व्यंग्य, पारिवारिक जीवन के व्यंग्य, साहित्यिक परिवेश के व्यंग्य, मानव चरित्र के व्यंग्य, श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य निबंध, श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ, श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी, काका हाथरसी हास्य रचनावली (पाँच भाग)(प्रभात प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित); पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ, चुनी हुई हास्य कविताएँ (हिन्दी साहित्य निकेतन द्वारा प्रकाशित); 1984 से 2004 तक प्रति वर्ष की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाएँ (बाईस खंड) (हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर एवं डायमण्ड पाकेट बुक्स, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित)।[10]

अन्य विधाओं की पुस्तकें

अभिनन्दन ग्रन्थ: काका हाथरसी अभिनन्दन ग्रन्थ (काका हाथरसी अभिनन्दन ग्रन्थ समिति द्वारा प्रकाशित)।

बाल-साहित्य: इनसे प्रेरणा लें : विवेकानन्द, महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, लाला लाजपत राय, लोकमान्य तिलक, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल (डायमण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित); पंचतन्त्र की रोचक कहानियाँ, पंचतन्त्र की प्रेरक कहानियाँ, पंचतन्त्र की मनोरंजक कहानियाँ, पंचतन्त्र की शिक्षाप्रद कहानियाँ, हितोपदेश की रोचक कहानियाँ, हितोपदेश की प्रेरक कहानियाँ, हितोपदेश की मनोरंजक कहानियाँ, हितोपदेश की शिक्षाप्रद कहानियाँ, मनोरंजक जातक कथाएँ, रोचक जातक कथाएँ, शिक्षाप्रद जातक कथाएँ, प्रेरक जातक कथाएँ, भारत के गौरव, बच्चों के अनुपम नाटक, बच्चों के उत्तम नाटक, भारतीय गौरव के बाल नाटक, प्रेमचंद की कहानियों पर आधारित नाटक।[11]

भक्ति साहित्य: प्रेमदीवानी मीरा, महात्मा कबीर, गुरु नानकदेव (डायमण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित)।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

कोश-साहित्य: अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश, अंग्रेज़ी-अंग्रेज़ी-हिन्दी कोश, हिन्दी-अंग्रेज़ी कोश, हिन्दी शब्दकोश, अंग्रेज़ी-अंग्रेज़ी कोश, हिन्दी समानान्तर कोश (डायमण्ड पब्लिकेशंस प्रा.लि. द्वारा प्रकाशित)।

अन्य पुस्तकें

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें, हिंदी रूबाइयाँ और मुक्तक, काका हाथरसी की विशिष्ट रचनाएँ, हिन्दी ग़ज़ल-यात्रा (दो भाग) (हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर द्वारा प्रकाशित), काका की पाती (2004)। यह इतना वर्गीकृत है कि हर क्षेत्र और व्यक्ति से जुड़ी जानकारी है, जैसे तुलसीदास पर कितना कार्य किया गया है, उनकी भाषा पर कितना काम हुआ है, इस तरह की जानकारी उपलब्ध है। उनका कहना है कि यह एक बड़ा प्रकल्प था। डा. गिरिराज की रचनावली 11 खंडों में लगभग पांच हजार पेज में प्रकाशित हुई है। गजल, नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, बाल साहित्य, सभी क्षेत्रों में इन्होंने कार्य किया है। डा. गिरिराज की शिक्षा आगरा विश्वविद्यालय से हुई है। पीएचडी 1971 में पीएचडी की उपाधि मिली थी। इनकी पहली पुस्तक 1964 में 'तीर और तरंग' के नाम से छपी थी। तब से निरंतर लेखन कार्य कर रहे हैं। लगभग बीस शोध छात्रों में इनके साहित्य पर शोध उपाधि प्राप्त की है।इनकी पत्रिका 'शोध दिशा' के नाम से प्रकाशित हो रही है, जिसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से मान्यता मिली हुई है। डा. गिरिराज का कहना है कि लेखन में सहज कुछ भी नहीं होता, वह कभी भी आ सकता है, उतावलेपन में, फोन की रोशनी में, चलते-चलते, कभी भी। इन्हें गजल की विधा सबसे अधिक पसंद है क्योंकि गजल एक ऐसी विधा है जिसमें अपनी अभिव्यक्ति बहुत मजबूती से व्यक्त की जा सकती है। गजलें दो पंक्तियों में जिदगी का सार दे देती हैं। वे बात करते हुए अपनी गजल सुनाते हैं - वो हम हैं जो अंधेरे में उजाला ढूंढ लेते हैं, दीये की तरह जलते हैं सवेरा ढूंढ लेते हैं।अगर संकल्प हो मन में, अगर चलने का साहस हो, अंधेरे में कदम मंजिल का रास्ता ढूंढ लेते हैं। इनका कहना है कि हिदी गजल समाज से जुड़कर चली हैं। इनकी गजलें आशावादी हैं, प्रेरक हैं, जीवनदर्शन के साथ आनंददायी हैं। यह भावनाओं का आधार देकर रची गई हैं।[12]

विचार-विमर्श

ग़ज़ल के ग़ज़लपन को विभिन्न दोषों के आघात से बचाने के लिये डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल अपनी सम्पादित पुस्तक 'हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें' की भूमिका में लिखते हैं कि-''बात ध्यान देने की है कि क़ाफिये [तुक] में अधिक बल स्वरों की समानता पर दिया गया है। जैसे-'बदन' का 'दन' और 'चमन' का 'मन' समान स्वर है, जबकि 'दिन' और 'गिन' उससे भिन्न हो गये। इसी प्रकार 'जलना', 'मलना', 'ढलना' एक समान क़ाफिये हो सकते हैं, पर इनके साथ 'हिलना', 'मिलना', का प्रयोग वर्जित है। कुछ अन्य तुकों पर भी दृष्टि डालें तो 'आकाश' का क़ाफिया 'विश्वास' नहीं हो सकता, क्योंकि 'श' और 'स' की ध्वनियाँ भिन्न हैं। 'आई', 'खाई', के साथ 'परछाईं', 'साईं' या 'राख' के साथ 'आग' और 'नाग' अथवा 'शाम', 'नाम', 'काम' के साथ 'आन', 'वाण', 'प्राण' तथा 'हवा' के साथ 'धुआँ' क़ाफिया का प्रयोग निषिद्ध है।''

वे आगे लिखते हैं कि-''यदि मतले में 'जलना' का क़ाफिया 'ऐसा' से बाँध गया है तो वह अन्त तक 'आ' की पेरवी करेगा। यदि मतले में 'जलना' का क़ाफिया 'गलना' बाँध दिया है तो इसी की पाबंदी पर 'छलना', 'ढलना', 'पलना' आदि का प्रयोग करना होगा।''[13]

हिन्दी ग़ज़ल के पितामह दुष्यंत कुमार की ग़ज़लों में आये दोषों पर वे टिप्पणी देते हैं कि-''हो गयी है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए'' नामक ग़ज़ल में 'पिघलनी' 'निकलनी' का क़ाफिया 'हिलनी' तुक से मिलाने का प्रयोग उचित नहीं है। एक अन्य ग़ज़ल में दुष्यंत कुमार ने 'नारे', 'तारे' के साथ 'पतवारें', 'तलवारें', 'दीवारें', क़ाफियों का प्रयोग किया है। इसमें अनुनासिकता के कारण स्वर की भिन्नता हो गयी है, अतः इन क़ाफियों को स्वीकार नहीं किया जा सकता।''

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लों को प्रस्तुत करने से पहले ग़ज़ल के शास्त्रीय पक्ष पर की गयी यह चर्चा इसलिए सार्थक है क्योंकि ऐसे ही नियमों-उपनियमों के द्वारा ग़ज़ल का ग़ज़लपन तय होता है। ग़ज़ल में रदीफ़-क़ाफियों की शुद्ध व्यवस्था का प्रावधान ग़ज़ल की जान होता है। लेकिन डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल की इन बातों की सार्थकता का तब क्या औचित्य रह जाता है, जब वे इसी पुस्तक की पृ. संख्या-59 पर अपनी एक ग़ज़ल में 'आहों','निगाहों' की तुक 'बाँहों' से मिलाते हैं और 'आहों' क़ाफिए को इस ग़ज़ल के अगले शे'र की 'निगाहों' से एक अन्य शे'र की 'निगाहों' को अड़ाते हैं। इन्ही क़ाफियों के क्रम में वे 'गुनाहों और 'पनाहों' क़ाफिये भी लाते हैं। ये ग़ज़ल की व्याख्याओं, व्यवस्थाओं और सृजन के बीच कैसे नाते हैं, जो स्वराघात, स्वरापात और अनुनासिक स्वर-भिन्ना के बावजूद हिन्दीग़ज़ल बन जाते हैं।[14]

हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें कितनी [श्रेष्ठ ही नहीं] सर्वश्रेष्ठ हैं, आइये इसका भी जायजा लें-

श्री आत्मप्रकाश शुक्ल पृ. 25 पर 'शयन', 'नयन', 'हवन' के बीच तीन बार 'मन' क़ाफिया लाकर 'अध्ययन' करते हैं और इस प्रकार 'मन' में 'यन' की तुकावृत्ति के माध्यम से ग़ज़ल के भीतर हिन्दीग़ज़ल का स्वरालोक भरते हैं।

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की ही तरह हिन्दीग़ज़ल के महान उपदेशक, विवेचनकर्त्ता , डॉ. उर्मिलेश 'मरता नहीं तो क्या करता' की विवशता लादे हुए इसी संग्रह के पृ. 30 पर मतला के 'दरबार' में 'हार' कर 'अंधियार' का 'त्यौहार' मनाते हुए, हिन्दीग़ज़ल का ऐसा 'उपहार' देते हैं, जिसका 'सत्कार' तीन बार 'हार' के रूप में रदीफ की तरह होता है। कुल मिलाकर यह काफ़ियों का अनूठा 'विस्तार' ग़ज़ल की आँख भिगोता है।[15]

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

हिन्दी ग़ज़ल-विद्यालय के हिन्दी प्रवक्ता डॉ. कुँअर बेचैन की ग़ज़ल के नैन वैसे तो कथ्य की विलक्षणता को संकेतों में कहने में बेहद माहिर हैं, लेकिन पृ. 47 पर उनकी ग़ज़ल के क़ाफिये का श्रवण बना 'स्वर', 'काँवर' के साथ सिर्फ 'वर' है, तो भले ही कुछ 'अन्तर' से ही सही, दशरथ बने स्वराघात के 'मंतर' से अपने 'सर' को खून से 'तर' करायेगा। हिन्दीग़ज़ल में क़ाफियों का जल-संचय करते इस बेचारे श्रवण को कौन बचायेगा?

श्री ओंकार गुलशन की ग़ज़ल की कहन में नवीनपन है किन्तु पृ. 38 पर मतला में 'नाम' से 'बदनाम' की तुक क़ाफिये को ही 'गुमनाम' कर देती है। आगे इसमें 'राम', 'आराम' करते हुए 'घनश्याम'-से बाँसुरी बजाते हैं। हिन्दीग़ज़ल में क्या यही शुद्ध क़ाफिये कहलाते हैं? हिन्दीग़ज़ल की रोशनी के हस्ताक्षर, मान्यवर जहीर कुरैशी इस पुस्तक के पृ. 78 पर अपनी ग़ज़ल के मतला के 'अन्जान' शहर में क़ाफिये की शुद्ध 'पहचान' करने में इतने 'परेशान' हैं कि 'शमशान' तक जाते हैं और वहां अपनी दूसरी ग़ज़ल में 'जहीर' की तुक 'हीर' से मिलाते हैं और पृ. 62 पर 'कबीर' कहलाते हैं।

श्री महेन्द्र भटनागर 'चुराई' की तुक 'छिपाई' से मिलाने के बाद अगर आगे की तुकों में 'अपना' 'सपना' लायें और ऐसी ग़ज़लें सर्वश्रेष्ठ न कहलायें, ऐसा कैसे हो सकता है, ऐसी ग़ज़लों की तुकें तो हिन्दीग़ज़लों की 'धरोहर' हैं लेकिन डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के 'आसरे पर' हैं। इसलिये हिन्दी ग़ज़ल कहने की इस 'होड़' में श्री विनोद तिवारीजी पृ. 157 पर 'जोड़' की तुक यदि 'दौड़ से मिलायें तो हम क्यों खेद जताएँ। हम ठहरे तेवरी की जेवरी बँटने वाले तेवरीकार, हमें क्या अधिकार जो काका हाथरसी की इसी पुस्तक में छपी हज्लों को हिन्दीग़ज़ल न बताएँ।[16]

हिन्दी में ग़ज़ल की शक़्ल आजकल है ही ऐसी कि किसी से मतला अर्थात् सिर ग़ायब है तो कहीं तुकें सिसक रही हैं। कहीं छंद से लय का मकरन्द लापता है तो कहीं ग़ज़ल के नाम पर कोरी गीतात्मकता है। हिन्दी के ग़ज़लकार हैं कि ग़ज़ल के ग़ज़लपन से मुक्ति पाकर भी ग़ज़ल-ग़ज़ल चीख रहे हैं। कुछ मिलाकर ग़ज़ल के नाम पर में उत्पात ही उत्पात दीख रहे हैं।

'बराबर' हिन्दी पाक्षिक के मई-2002 अंक में श्री प्रदीप दुबे 'दीप' की पृ. 11 पर 6 ग़ज़लें प्रकाशित हैं। वे अपनी पहली ग़ज़ल के मतला में 'खंजर' की तुक 'मंतर' से बाँधते हैं और आगे की तुकें 'अस्थिपंजर' और 'बंजर' लाते हैं। तीसरी ग़ज़ल में वे 'भारी' और 'हितकारी' की तुक 'उजियारी', 'तैयारी', 'यारी' से मिलाते हैं। यह सब किसी हद तक झेला जा सकता है। लेकिन ग़ज़ल संख्या चार में 'पहरे' की तुक 'सवेरे' और फिर 'चेहरे' के साथ-साथ 'गहरे' और 'मेरे' से मिलती है तो ऊब पैदा होती है, खूब पैदा होती है। ग़ज़ल में सही तुकों का अभाव भले ही घाव दे, मगर क्या किया जा सकता है? हिन्दी में ग़ज़ल की औसत यही शक़्ल है।

अतः ऊबते हुए ही सही, प्रदीप दुवे 'दीप' की ग़ज़ल संख्या-6 का भी अवलोकन करें- इसके मतला में 'गुल' से 'पुल' की तुक बड़ी खूबसूरत तरीके से मिलायी गयी है, लेकिन इसके बाद की तुकें 'दिल' और 'बादल' कोई 'हल' देने के बजाय स्वराघात की उलझनें ही उलझन पैदा करती हैं, ग़ज़ल में मौत का डर भरती हैं।

ग़ज़ल की हत्या कर, ग़ज़ल को प्राणवान् बनाने के महान प्रयास में हिन्दी में ग़ज़लकार किस प्रकार जुटे हुए हैं, इसके लिये कुछ प्रमाण चर्चित कवि अशोक अंजुम द्वारा सम्पादित 'नई सदी के प्रतिनिधि ग़ज़लकार' नामक पुस्तक से भी प्रस्तुत हैं-[17]

हिन्दी ग़ज़ल के महाज्ञाता, चन्द्रसेन विराट पृ.51 पर अपनी दूसरी ग़ज़ल के मतला के क़ाफिये में काफी ' विकल' रहते हुए बड़ी ही 'सजल' 'ग़ज़ल' लिखते हैं और इस ग़ज़ल में 'सरल', 'विरल' बार-बार दिखते हैं। स्वर का बदलना 'सजल' और 'ग़ज़ल' के बीच है या 'सरल', 'तरल' और 'विरल' के बीच या 'विकल' और 'धवल' के बीच? विराटजी की यह ग़ज़ल भले ही 'विमल' दिखे, किन्तु इसका 'योगपफल', 'विफल' ही है।

श्री शिवओम 'अम्बर' हिन्दीग़ज़ल के स्वर्णाक्षर हैं। उनकी ग़ज़ल की 'साधना ' तो 'नीरजना' ही नहीं 'आराधना ' है लेकिन इस पुस्तक के पृ. 131 पर प्रकाशित ग़ज़ल की तुकों के बीच यह कैसी 'सम्भावना' है, जिसमें स्वराघात देने वाली तुक 'प्रस्तावना' है, 'आराधना ' की तुक 'आराधना' है।

डॉ. रामसनेहीलाल शर्मा 'यायावर' हिन्दी ग़ज़ल के एक कद्दावर फनकार हैं। उक्त संग्रह के पृ. 116 पर उनकी दूसरी ग़ज़ल के क़ाफिये अगर दो बार 'खबर' बनकर 'मुखर' होते हैं तो चार बार 'सोचकर', 'झूमकर', 'भागकर' छोड़कर'- अर्थात्, केवल 'कर' में मिटकर इतना अवसर ही नहीं देते कि स्वराघात से बचा जा सके और इन्हें शुद्ध क़ाफिया कहा जा सके।[18]

आभा पूर्वे दोहों में ग़ज़ल कहती हैं। पृ. 25 पर छपी उनकी दोहाग़ज़ल की शक़ल यह है कि 'प्राण' की तुक 'वरदान' ही नहीं, तीन बार 'मान' भी है। यहाँ भी स्वराघात की मौजूदगी है।

ग़ज़ल की कहन का फन जिन ग़ज़लकारों को ख्याति के चरम तक ले गया है, ऐसे ख्याति प्राप्त ग़ज़लकार भी हिन्दीग़ज़ल में चमत्कार दिखला रहे हैं।

प्रो. शहरयाह की ख्याति, खुशबू की भांति विश्व के दरवाजों पर दस्तक दे चुकी है। कई अकादमियों के पुरस्कारों से उनकी शायरी सजी है। वे पृ. 128 पर अपनी पहली ग़ज़ल में 'समझूंगा' की तुक 'रक्खूंगा', 'देखूंगा', 'लिक्खूंगा' के रूप में मिलाते हैं और उसमें दो बार 'बदलूंगा' भी लाते हैं, तो 'खूंगा' से ग़ज़ल की पूरी तस्वीर हिलती है और गिरकर बेनूर हो जाती है। चकनाचूर हो जाती है। संयुक्त रदीफ क़ाफियों का यह प्रयोग, काफियों का भंग-योग बन जाता है।

इसी संग्रह के पृ. 125 पर विज्ञानव्रत की ग़ज़ल का रथ स्वराघात की कीचड़ इतना 'लतपथ' हो जाता है कि वह ग़ज़ल से खोये समांत [रदीफ] को चीख-चीख कर सहायता के लिये बुलाता है। धीरे-धीरे कीचड़ में पूरा का पूरा रथ डूब जाता है। ग़ज़ल के क़ाफियों का पता करने पर 'केला' हाथ लगता है जो 'था' 'था' 'कहता' हुआ, रदीफ के गायब हो जाने की समस्या पर बार-बार 'झगड़ा' करता है। 'पता' 'केला', 'था', 'था', कहता तुकांतों के बीच यह भी पता नहीं चल पाता है कि इस ग़ज़ल में रदीफ़ या क़ाफियों की व्यवस्था क्या है?

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

हिन्दी ग़ज़ल में ग़ज़ल की यह अवस्था क्या है?[19]
श्री तुफैल चतुर्वेदी इसी संग्रह के पृ. 86 पर 'पल' की तुक 'घायल' लाने के बाद 'कोयल' लाते हैं। 'यार' की तुक 'यार' से ही निभाते हैं। उनके ये क़ाफिये स्वर के आधार पर क्या बदलाव लाते हैं?
श्री निदा फाजली वैसे तो ग़ज़लें बहुत भलीभांति कहते हैं लेकिन मतला के क़ाफिये 'जीवन' और 'उलझन' यदि 'बन्धन' के साथ [इस संग्रह के पृ.94 पर] 'ईंधन' बन जायें तो इसका 'धन' काफ़िया होकर भी रदीफ-सा लगेगा और स्वर पर आघात जगेगा।
चर्चित प्रतिष्ठित कवि बशीर बद्र, काबिले कद्र हैं। उनकी प्रभा हिन्दी की हर सभा में छटा बिखेरती है। ग़ज़ल में विलक्षण प्रयोग के योग उनके साथ हैं। किन्तु पृ. 68 पर प्रकाशित उनकी दूसरी ग़ज़ल का मतला 'हो' से 'खो' की तुक मिलने के बाद दो बार फिर 'हो', 'हो' चिल्लाता है और अन्त में फिर 'खो' में खो जाता है। यह ग़ज़ल का हिन्दीग़ज़ल से कैसा नाता है?
श्री बेकल उत्साही इसी पुस्तक की पृ. सं. 69 पर विराजमान हैं। उनकी ग़ज़लों के क़ाफिये मौलिक और बेमिसाल हैं, जिनमें विलक्षण प्रयोगों के कमाल हैं। लेकिन यहाँ भी सवाल हैं-उनकी दूसरी ग़ज़ल के दस शे'रों की 'चिट्ठियाँ' चार बार 'लियाँ' 'लियाँ' की ध्वनि के साथ 'रस्सियाँ' बटती हैं और वे एक दूसरे के क़ाफियापन को उलटती-पुलटती हैं, अन्ततः एक रदीफ की तरह सिमटती हैं। ऐसा क्यों?
उत्तर यों-
हिन्दी में ग़ज़ल के नियमों से छूट लेने की जो लूट मची हुई है, उससे ग़ज़ल का ग़ज़लपन नष्ट हो रहा है। ग़ज़लकार को जहाँ सजग रहना चाहिए, वहीं सो रहा है।[20]

परिणाम

शोध-प्रबन्ध

- हिंदी-ग़ज़ल का उद्भव और विकास : गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान, एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (डॉ॰ श्रीमती पूनम अग्रवाल); शोध-निदेशक डॉ॰ विजयलक्ष्मी अग्रवाल, रीडर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, सौभाग्यवती दानी महिला महाविद्यालय, धामपुर (उ.प्र.)
- साठोत्तरी हिंदी-गज़ल और डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का गज़ल-साहित्य, चौ. चरणसिंह मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ (अनिलकुमार शर्मा); शोध-निदेशक डॉ॰ महेश चंद्र, रीडर हिंदी विभाग, मेरठ कालेज, मेरठ (उ.प्र.)[22]
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : रचनाधर्मिता के विविध आयाम, एक मूल्यांकन; चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.) (श्रीमती अर्चना सिंह); शोध-निदेशक डॉ॰ (श्रीमती) अनिल कुमारी, रीडर हिंदी विभाग, मेरठ कालेज, मेरठ (उ.प्र.)
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : व्यक्ति और साहित्य; विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) (डॉ॰हरीशकुमार सिंह); शोध-निदेशक डॉ॰ हरिमोहन बुधौलिया, प्रो॰ एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)[23]
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल : रचनाधर्मिता का मूल्यांकन; हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (उत्तरांचल) (कुमारी ज्योति श्रीवास्तव); शोध-निदेशक डॉ॰ (श्रीमती) कमलेश शर्मा, रीडर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, बी.एस.एम. कालेज, रुड़की (उत्तरांचल)
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के काव्य में सौंदर्य एवं प्रेम-निरूपण; चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.) (श्रीमती नीनू); शोध-निदेशक

डॉ॰ (श्रीमती) शशिबाला अग्रवाल, रीडर हिंदी विभाग, कनोहरलाल स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)

- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के नाटकों में युगबोध; चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.) 2010 (श्रीमती शकुंतला); शोध-निदेशक डॉ॰ (श्रीमती) उर्मिला अग्रवाल, प्राचार्या एवं अध्यक्षा हिंदी विभाग, स्माइल नेशनल महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.)[24]
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के साहित्य में जीवनमूल्य, एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (कु.हेमलता देवी); शोध-निदेशक डॉ॰ शंकरलाल शर्मा, रीडर एवं अध्यक्ष हिंदी विभाग, आर.एस.एम. (पीजी.) कालेज, धामपुर (उ.प्र.)
- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के साहित्य में व्यंग्य, चौ. चरणसिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उ.प्र.) (श्री आदर्श कुमार); शोध-निदेशक डॉ॰ (श्रीमती) शशिप्रभा त्यागी, प्राचार्या एवं अध्यक्षा हिंदी विभाग, ए.के.पी. (पी.जी.) कालेज, खुर्जा (उ.प्र.)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के साहित्य में भाषिक हास्य व्यंग्य, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास, 2011 (वी जयलक्ष्मी), शोध निदेशक डॉ निर्मला एस मौर्य, अध्यक्ष उच्च शिक्षा एवं शोध संस्थान दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के साहित्य में व्यंग्य के विविध आयाम, एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली 2010 (कु. स्नेहलता); शोध-निदेशक डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल, रीडर हिंदी विभाग, वर्धमान पी.जी कालेज, बिजनौर (उ.प्र.)[25]

- लघुप्रबंध : हिंदी-ग़ज़लसाहित्य में डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल एवं उनका योगदान, एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली 1997, (कु. शैली मनोहर);

- हिंदी-ग़ज़ल की विकास-यात्रा और डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का योगदान, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल 1999 (निशांतकुमार सिंह);

- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल का नाट्यसाहित्य : एक विहंगावलोकन, एम.जे.पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली 2001 (कु. करुणा शर्मा);[26]

- डॉ॰ गिरिराजशरण अग्रवाल के ग़ज़ल-संग्रह 'रोशनी बनकर जिओ' में आशावाद के स्वर, हेमवतीनंदन बहुगुणा विश्वविद्यालय, श्रीनगर, 2004 (कु. प्रवेश अग्रवाल);

- मौरिशस विश्वविद्यालय में गिरिराजशरण अग्रवाल की बाल-कहानियों, नारी-जीवन की कहानियों पर लघु शोधकार्य संपन्न।[21]

निष्कर्ष

डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल की रचनावली का संपादन और प्रकाशन हर्ष का विषय है। गीत और कविताओं से आरंभ करके साहित्य की विविध विधाओं में साहित्य-सृजन उनकी लेखन-क्षमता का पुष्ट प्रमाण है। इसी आधार पर उनकी रचनावली को ग्यारह भागों में प्रकाशित किया गया है-1. ग़ज़ल समग्र; 2. काव्य समग्र दो (कविताएँ, गीत, मुक्तक, दोहा); 3. कहानी समग्र; 4. गद्य समग्र (निबंध, साहित्यिक अनुभव, शोध, समीक्षा आदि); 5. जीवनी समग्र; 6. नाटक समग्र एक (बाल-नाटक); 7. नाटक समग्र दो (हास्य-नाटक, सामाजिक नाटक, नुक्कड़ नाटक); 8. व्यंग्य समग्र एक; 9. व्यंग्य समग्र दो; 10. भूमिका समग्र; 11. बालसाहित्य समग्र।[27]

गिरिराज की सबसे प्रिय विधा ग़ज़ल है। ग़ज़ल के उनके छह संग्रह प्रकाशित हुए हैं, जिनमें 500 से अधिक ग़ज़लें संकलित हैं। ग़ज़ल के विषय में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल ने स्वयं लिखा है-'ग़ज़ल हृदय की अनुभूति की सूक्तिमय शैली है। इसकी अपनी भाषा, अपना भाव, अपनी उपमाएँ और अलंकार होते हैं। ग़ज़ल में एक विशेष लोच व आकर्षण होता है। किसी बात को सीधे-सीधे कह देना ग़ज़ल को पसंद नहीं, जो कुछ कहना है-संकेतों में। इसलिए ग़ज़ल गागर में सागर है।' उनकी ग़ज़लों की सबसे बड़ी विशेषता है-आशावाद। गिरिराजशरण अग्रवाल समग्र के द्वितीय खंड में डॉ. अग्रवाल की कविताएँ (अक्षर हूँ मैं), हास्य कविताएँ (मेरी हास्य-व्यंग्य कविताएँ) मुक्तक (बूँद के अंदर समंदर) रूबाइयाँ, दोहे (जिनमें मुहावरा दोहे तथा पर्यायवाची दोहे भी सम्मिलित हैं) संगृहीत किए गए हैं। अपनी ग़ज़लों में ज़िंदगी की इंद्रधनुषी झाँकियों के बीच निरंतर आशावाद की ध्वजा लेकर चलनेवाले गिरिराजशरण अग्रवाल ने 'अक्षर हूँ मैं' के माध्यम से सचमुच अपने जीवन के कड़वे-मीठे, काले-सफ़ेद, निराशापूर्ण और आशाओं से भरे चिंतन को पूरी ईमानदारी से अभिव्यक्ति दी है, जो सीधे पाठक से संवाद करके उसे बाँध लेती है। इसी खंड में अप्रकाशित रूबाइयाँ, दोहे (इनमें पर्यायवाची दोहे तथा मुहावरा दोहे प्रमुख हैं) तथा गीत (जो समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं) तथा हास्य-व्यंग्य शैली की ग़ज़लें भी संगृहीत हैं।इस रचनावली का तीसरा खंड कहानियों का है। इस खंड में डॉ. अग्रवाल द्वारा लिखी गई 82 कहानियाँ संकलित हैं। इनमें से कुछ कहानियाँ उनके पूर्व प्रकाशित कहानी-संग्रहों-जिज्ञासा एवं अन्य कहानियाँ, छोटे-छोटे सुख, आदमी और कुत्ते की नाक में भी प्रकाशित हो चुकी हैं।[28]इनके अतिरिक्त उनकी अप्रकाशित कहानियाँ भी इस खंड में सम्मिलित हैं। डॉ. कमलकिशोर गोयनका के अनुसार 'डॉ. अग्रवाल कहानी लिखने की कला में तथा कहानी को जीवन के उच्च सरोकारों से जोड़ने में पूर्णत: पारंगत हैं। इस खंड में उनकी व्यापक जीवन दृष्टि से परिपूर्ण कहानियाँ संगृहीत हैं।'चौथा खंड गद्य समग्र का है। इस खंड में गिरिराजशरण अग्रवाल के 'सवाल साहित्य के' (साहित्य में लेखक के अनुभव) के साथ उनके समय-समय पर प्रकाशित लेख संगृहीत हैं। डॉ. अग्रवाल सन् 2001-2002 में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय के मंडल 3100 के मंडलाध्यक्ष थे। मंडलाध्यक्ष के रूप में दिए गए उनके उद्बोधन और प्रकाशित आलेख भी इसी खंड में रखे गए हैं। इनके अतिरिक्त अनेक महत्त्वपूर्ण आलेखों का संग्रह भी इस खंड में किया गया है, जिसमें डॉ. अग्रवाल के चिंतन, मनन, विवेचन तथा उनकी शोधवृत्ति के दर्शन होते हैं। निबंधों की भाषा सहज, सरल, संप्रेषणक्षम है।डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल समग्र के पाँचवें खंड में भारतीय साधकों, संतों, महापुरुषों, राजनेताओं और स्वतंत्रता-सेनानियों, साहित्यकारों की जीवनियाँ, क्रांतिकारी सुभाष के जीवन पर आधारित जीवनीपरक उपन्यास 'क्रांतिकारी सुभाष', लेखक का आत्मचरित (आत्मकथ्य) संयोजित किया गया है। क्रांतिकारी सुभाष' जीवनीपरक

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

उपन्यास है, जो महान देशभक्त और स्वतंत्रता-सेनानी सुभाषचंद्र बोस के जीवन को आधार बनाकर लिखा गया है। [29]आत्मकथ्य में डॉ. गिरिराजशरण ने अपने जीवन की उन घटनाओं का उल्लेख किया है, जो सामान्यत: पाठकों के सामने बाहरी व्यक्ति द्वारा नहीं आ सकतीं।खंड छह और सात में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल द्वारा लिखित बाल नाटकों, हास्य-व्यंग्य एकांकियों, समाज तथा राजनीति से जुड़े एकांकियों तथा नुक्कड़ नाटकों को संगृहीत किया गया है। डॉ. अग्रवाल ने प्रभात प्रकाशन, दिल्ली के लिए एकांकी नाटकों की एक बड़ी शृंखला का संपादन किया था। इस शृंखला में विषय-क्रम से एकांकियों का संकलन किया गया था। तब भी उन्होंने प्रत्येक खंड के लिए एकांकियों की रचना की थी। उसके बाद तो उनके एकांकियों के अनेक संकलन प्रकाशित हुए। इनमें प्रमुख हैं-नीली आँखें (जो बाद में 'मंचीय सामाजिक नाटक' नाम से प्रकाशित हुआ), ग्यारह नुक्कड़ नाटक, मंचीय व्यंग्य एकांकी, बच्चों के शिक्षाप्रद नाटक, बच्चों के हास्य नाटक, बच्चों के रोचक नाटक। इन सभी पुस्तकों में प्रकाशित एकांकी नाटकों को इन दोनों खंडों में संयोजित किया गया है।खंड आठ तथा नौ में डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल के 202 व्यंग्य संकलित हैं। हास्य और व्यंग्य के क्षेत्र में डॉ. अग्रवाल का कार्य इतना व्यापक है, ऐसा कम लोगों को ही ज्ञात है। उनके व्यंग्य के पाँच संकलन प्रकाशित हुए हैं-बाबू झोलानाथ, राजनीति में गिरगिटवाद, मेरे इक्यावन व्यंग्य, आदमी और कुत्ते की नाक तथा आओ भ्रष्टाचार करें। हास्य-व्यंग्य-लेखन की एक विशिष्ट शैली को विकसित करने में डॉ. अग्रवाल का योगदान विशेष सराहनीय है। उन्होंने स्वयं कहा है-'विसंगतियों और विडंबना-विकारों के रहते हुए व्यंग्य हास्यशून्य नहीं हो सकता और हास्य भी व्यंग्य के बिना अपना अस्तित्व बनाकर नहीं रख सकता।' [30] खंड दस भूमिका खंड है। डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल ने सन् 1986 से 2004 तक प्रत्येक वर्ष की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनाओं का संपादन किया। इनके अतिरिक्त विषय-आधारित कहानियों के ग्यारह खंडों, एकांकियों के दस खंडों, व्यंग्य के दस खंडों का संपादन किया। इन सभी खंडों में विषयानुसार भूमिकाएँ लिखीं। पिछले दशक के श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य एकांकी, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ, पिछले दशक की श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कहानियाँ संपादित कीं। अपनी अनेक पुस्तकों की भूमिकाओं के साथ-साथ कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की भूमिकाओं को लिखने का अवसर भी उन्हें मिला। इन सभी भूमिकाओं को दसवें खंड में सम्मिलित किया गया है। 'शोध दिशा' त्रैमासिक के जुलाई 2006 और उसके बाद लिखे गए महत्त्वपूर्ण संपादकीय भी दसवें खंड में सम्मिलित हैं।गिरिराजशरण अग्रवाल की रचनावली के खंड ग्यारह में उनके द्वारा रचित बालसाहित्य को सम्मिलित किया गया है। उन्होंने बच्चों के लिए एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक लिखी 'मानव विकास की कहानी', जो पहले 'आओ अतीत में चलें' नाम से प्रकाशित हुई थी और जिस पर अनेक संस्थाओं ने पुरस्कार देकर प्रतिष्ठा की मुहर लगाई थी। इस पुस्तक में डॉ. अग्रवाल ने मानव-सभ्यता का इतिहास रोचक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। इस कहानी को पढ़ते समय किसी प्रकार का बोझ बच्चे के मन-मस्तिष्क पर नहीं पड़ता और वह आसानी से मानव विकास की कहानी को समझ लेता है। इसी खंड में डॉ. अग्रवाल द्वारा लिखी हुई 29 बालकहानियाँ भी सम्मिलित हैं। इनमें कई कहानियाँ वैज्ञानिक और बालमनोविज्ञान के दृष्टिकोण से लिखी गई हैं।यह डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल रचनावली के ग्यारह खंडों का संक्षिप्त विवरण है। [31]इन सभी खंडों में आप उन के व्यक्तित्व से उनके साहित्य की और साहित्य से उनके व्यक्तित्व की पहचान कर सकते हैं। डॉ. अग्रवाल एक तपस्वी साहित्यकार हैं, मौन साधक हैं, ज्ञान के जिज्ञासु और प्रसारक हैं। उनका काम बड़ा और विस्तृत है। यह रचनावली उनके जीवन की सार्थकता का प्रमाण है और इसका भी कि संभल या बिजनौर जैसे एक छोटे नगर से कोई कैसे राष्ट्रीय बनता है और अपनी पहचान को स्थायी बनाता है।[32]

संदर्भ

शोध-निदेशन

1) डॉ॰ (श्रीमती) सुषमा त्रिगुणायत; रामचरितमानस में संस्कृत ग्रंथों से अनूदित अंश और उनमें तुलसी की कारयित्री प्रतिभा का योगदान (1985);
2) डॉ॰ मनोज डबराल; वव्र ोक्ति सिद्धांत की दृष्टि से प्रसाद के नाट्यसाहित्य का अध्ययन (1985);
3) डॉ॰ मुनीशप्रकाश अग्रवाल; अष्टछाप साहित्य में भौगोलिक स्थानों का अनुशीलन (1986);
4) डॉ॰ गजेंद्रसिंह; भारतीय काव्यशास्त्र की दृष्टि से प्रसाद के कथासाहित्य का अध्ययन (1988)
5) डॉ॰ (श्रीमती) मिथिलेश माहेश्वरी; हिंदी की हास्य-व्यंग्य काव्यधारा और काका हाथरसी का हास्य-व्यंग्य साहित्य (1989);
6) डॉ॰ (श्रीमती) रेखा जैन; हिंदी के कथासाहित्य में दलित वर्ग की समस्या (1990);
7) डॉ॰ (श्रीमती) अल्पना डबराल; रीति-सिद्धांत की दृष्टि से बच्चन के काव्यसाहित्य का अध्ययन (1990);
8) डॉ॰ अशोक चक्रधर; गजानन माधव मुक्तिबोध की कविताओं की रचना-प्रक्रिया और अर्थ- प्रक्रिया (1991);
9) डॉ॰ मनोजकुमार; स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में सांप्रदायिकता विरोधी चेतना (1997);
10) डॉ॰ अशोककुमार; बिजनौर जनपद के आधुनिककालीन साहित्यकार (2000);
11) डॉ॰ पारुल अग्रवाल; समस्यामूलक उपन्यास : परंपरा और भगवतीचरण वर्मा (2001);
12) डॉ॰ (श्रीमती) शशि प्रभा; शिक्षा की समस्याएँ और हिंदी-कथासाहित्य में उनकी अभिव्यक्ति (2001);
13) डॉ॰ निशांतकेतु; हिंदी-ग़ज़ल के विकास में रुहेलखंड के स्वातंत्र्योत्तर प्रमुख ग़ज़लकारों की भूमिका (2005);
14) श्रीमती मोनिका भटनागर; राष्ट्रीयता की अवधारणा और उसके संदर्भ में श्री चिरंजीत के नाट्य साहित्य का अध्ययन (2007)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 5, Issue 1, Janaury 2018 |

पुरस्कार-सम्मान

15) उ.प्र. युवा साहित्यकार संघ द्वारा 'सरस्वतीश्री' (1982);
16) तुलसी पीठ कासगंज द्वारा 'विद्यावारिधि' (1984);
17) विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ गांधीनगर द्वारा 'विद्यासागर' (1984);
18) रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा अनुशंसा पुरस्कार (1984);
19) अखिल भारतीय टेपा सम्मेलन, उज्जैन द्वारा सम्मानित (1992);
20) हिंदी अंतर्राष्ट्रीय विकास प्रवर्तक लंदन की हाथरस शाखा के तत्त्वावधान में अभिनंदन (1992);
21) व्यंग्य कृति 'बाबू झोलानाथ' पर उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ का अनुशंसा पुरस्कार (1996);
22) व्यंग्य कृति 'राजनीति में गिरगिटवाद' पर उ.प्र. हिंदी संस्थान लखनऊ का अनुशंसा पुरस्कार (1997);
23) उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के हीरक जयंती समारोह में 'अभिव्यंजना' (उत्तर प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की इकाई) द्वारा विशिष्ट सम्मान (1997);
24) मानवाधिकार : दशा और दिशा पुस्तक पर राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, नई दिल्ली (भारत सरकार) का प्रथम पुरस्कार (1998);
25) डॉ॰ रत्नलाल शर्मा स्मृति न्यास, दिल्ली का श्रीमती रतन शर्मा बालसाहित्य पुरस्कार (1999);
26) सहस्राब्दी विश्व हिंदी सम्मेलन द्वारा 'राष्ट्रीय हिंदीसेवी सहस्राब्दी सम्मान' (2000);
27) 'आओ अतीत में चलें' पुस्तक पर उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का सूर पुरस्कार (2001);
28) अखिल भारतीय साहित्य कला मंच द्वारा सम्मान (2001);
29) 'समन्वय' सहारनपुर द्वारा सारस्वत सम्मान (2003)
30) 'मंचीय व्यंग्य एकांकी' पुस्तक पर 10,000 रुपए का राष्ट्रधर्म गौरव सम्मान (2005)
31) उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनउ द्वारा 100,000 (एक लाख रुपए) का 'साहित्य भूषण' सम्मान 2008
32) केंद्रीय हिंदी निदेशालय (मानव संसाधन विकास मंत्रालय) नई दिल्ली का एक लाख रुपए का 'शिक्षा पुरस्कार' 2008